वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 240
ISBN 978-93-82071-02-0

महावीर समवसरण विधान

–: रचयित्री :–

तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास की प्रेरणास्रोत
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव, 11 अक्टूबर 2011 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में
पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
''प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष'' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404, फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

तृतीय संस्करण	वीर नि. सं. 2538, चैत्र शु. त्रयोदशी	मूल्य
1100 प्रतियाँ	5 अप्रैल 2012, महावीर जयंती	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशक एवं सम्पादक :–
स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

–: प्रबंध सम्पादक :–
जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण सन् 2003-2200, द्वितीय संस्करण, सन् 2009-1100 प्रतियाँ

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

किसी ने ठीक कहा है—

अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है।
निर्बल है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।।

परन्तु हमारे लिए यह बड़े ही गौरव की बात है कि हमने ऐसे देश में जन्म लिया जिसका नाम है ''भारत''। 'भा' अर्थात् प्रकाश तथा 'रत' अर्थात् लीन रहना, अर्थात् जहाँ के लोग आध्यात्मिकता के प्रकाश में लीन रहते हैं उस देश का नाम है 'भारत'।

इसी भारत देश के उत्तरप्रदेश में जन्मीं एक बालिका ने ''ज्ञानमती माताजी'' बनकर पूरे देश में धूम मचा रखी है, उन्होंने १ नहीं, दो नहीं अपितु २५० ग्रंथों का लेखन करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। उनकी इस प्रतिभाशक्ति से प्रभावित होकर फैजाबाद के अवध विश्वविद्यालय द्वारा सन् १९९५ में इन्हें डी.लिट् की मानद् उपाधि प्रदान की गई।

आज दुनिया का कोई भी स्थान ऐसा नहीं है जहाँ ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित विधानों की गूंज न हो। कहीं इन्द्रध्वज विधान हो रहा है तो कहीं कल्पद्रुम, कोई सर्वतोभद्रविधान करने में मग्न हैं तो कोई विश्वशांति महावीर विधान के माध्यम से विश्वशांति की मंगल कामना कर रहे हैं।

इसी श्रृंखला में पूज्य माताजी ने ''महावीर समवसरण विधान'' की रचना करके भक्तजनों को राजगृही तीर्थ के इतिहास से परिचित कराया है।

आज से लगभग २५६६ वर्ष पूर्व जब भगवान महावीर को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई तो प्रथम देशना के समय जब उनका समवसरण राजगृही के विपुलाचल पर्वत पर आया था, उसका रोमांचक कथानक आप सभी को विदित है कि एक मेंढक भगवान की भक्ति में ओतप्रोत होकर मुख में कमल की पांखुडी लेकर भगवान महावीर के समवसरण में जा रहा था। रास्ते में राजा श्रेणिक के हाथी के पैर के नीचे दबकर मर गया और तत्क्षण ही स्वर्ग में देव हुआ और देव के रूप में भगवान के समवसरण में आकर भक्ति-नृत्य करने लगा। राजा श्रेणिक ने समवसरण में पहुँचकर उसकी भक्ति देखी और उसके मुकुट में मेंढ़क का चिन्ह देखकर प्रश्न किया कि भगवन्! यह देव कौन है? इनके मुकुट में मेंढक का चिन्ह क्यों है? तब भगवान की दिव्यध्वनि से सारी बात जानकर राजा श्रेणिक बहुत प्रसन्न हुए।

वास्तव में समवसरण की महिमा अचिन्त्य है। जब एक मेंढक जैसा तुच्छ प्राणी भक्ति करके देव बन सकता है तो इसकी महिमा का वर्णन और क्या किया जाये? आप सभी इस विधान को करके समवसरण के महत्व से परिचित हों यही इस विधान की सार्थकता होगी।

विधान की रचयित्री परमपूज्य गणिनीप्रमुख

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी १५ (शरदपूर्णिमा) वि. सं. १९९१, (२२ अक्टूबर सन् १९३४)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् १९५२ में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. १, ई. सन् १९५३ को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम—क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. २, ई. सन् १९५६ को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती १०८ आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं २५० विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् १९९५ में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा—भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की ३१-३१ फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन १०८ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से २१ दिसम्बर २००८ को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (१९८२ से १९८५), समवसरण श्रीविहार (१९९८ से २००२), महावीर ज्योति (२००३-२००४) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् १९७२ में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् १९७४ से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं—

१. सन् १९७२ से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के माध्यम से लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

२. सन् १९७४ से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

३. सन् १९७४ से १९८५ तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

४. सन् १९७४ से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है—कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, तीन लोक रचना एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की ३१-३१ फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

५. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग १५००० ग्रंथ संग्रहीत हैं।

६. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

७. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

८. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

९. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

१०. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

११. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

१२. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य "नंद्यावर्त महल" तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

समवसरण का वर्णन

-गणिनी ज्ञानमती माताजी

भगवान को केवलज्ञान प्रगट होते ही इन्द्र की आज्ञा से कुबेर अर्धनिमिष में समवसरण की रचना कर देता है। उस समय भगवान तीनों लोकों को और उनकी भूत, भावी, वर्तमान समस्त पर्यायों को युगपत् एक समय में जान लेते हैं।

ऐसे केवलज्ञानी भगवान महावीर का समवसरण पृथ्वी से ५००० धनुष (२०००० हाथ) ऊपर आकाश में अधर है। पृथ्वी से एक हाथ ऊपर से एक-एक हाथ ऊँची बीस हजार सीढ़िया थीं। इनसे चढ़कर मनुष्य और तिर्यंच आदि सभी भव्य जीव-बाल, वृद्ध, अंधे, लूले, लंगड़े,रोगी आदि अंतर्मुहूर्त (४८ मिनट) में ऊपर पहुँच जाते थे। यह समवसरण १ योजन (८ मील) विस्तृत गोल है।

इसमें चार परकोटे और पाँच वेदियाँ थीं। इसमें आठ भूमियां थी। चारों दिशाओं में विस्तृत वीथी अर्थात् बड़ी-बड़ी गलियाँ थीं।

इस समवसरण में क्रम से पहले धूलिसाल परकोटा, चैत्यप्रासाद भूमि, वेदी, खातिकाभूमि, वेदी, लताभूमि, परकोटा, उपवनभूमि, वेदी, ध्वजभूमि, परकोटा, कल्पभूमि, वेदी, भवनभूमि, परकोटा, श्रीमण्डपभूमि और वेदी थी। आगे १६ सीढ़ी ऊपर चढ़कर पहली कटनी, ८ सीढ़ी चढ़कर दूसरी कटनी पुनः ८ सीढ़ी चढ़कर तीसरी कटनी आती है। इसी पर भगवान विराजमान थे।

प्रत्येक परकोटे और वेदियों में चारों दिशाओं में एक-एक गोपुर द्वार थे। जिनमें से पूर्वदिशा में "विजय", दक्षिण में "वैजयंत" पश्चिम में "जयंत" और उत्तर में "अपराजित" ऐसे नाम थे। इन द्वारों के उभय पार्श्व में दो-दो नाट्यशालाएं थीं, जिनमें देवांगनाएं भगवान की भक्ति में विभोर हो नृत्य-गान करती रहती थीं। वहाँ द्वारों के दोनों ओर नवनिधि, मंगलघट और धूपघट आदि स्थित थे। प्रत्येक परकोटे के द्वारों पर देवगण हाथ में दण्ड, मुद्गर आदि लेकर रक्षक बनकर खड़े रहते थे।

समवसरण में प्रवेश करते ही चारों गलियों में दिव्य रत्नमयी मानस्तंभ रहते हैं जो कि भगवान से बारहगुने ऊँचे होते हैं, बीस योजन तक प्रकाश फैलाते हैं। इनके दर्शन से मानी का मान गलित हो जाता है और वह भव्यात्मा सम्यग्दृष्टि बनकर अनंत संसार को सीमित कर लेता है।

केवली भगवान के प्रभाव से चारों तरफ चार सौ कोस तक सुभिक्षता, हिंसा और उपसर्गादि का अभाव, सभी जन्मजात शत्रु — सिंह, हिरण आदि का आपस में मैत्री भाव, छहों ऋतुओं के फल-फूलों का एक साथ आ जाना आदि अतिशय हो जाते हैं।

भगवान के श्रीविहार में आकाश में अधर, उनके चरण के नीचे देवगण स्वर्णमय सुगंधित दिव्य कमलों को रचते जाते हैं और अहिंसा धर्म के दिग्विजय को सूचित करता हुआ 'धर्मचक्र' भगवान के आगे-आगे चलता है।

समवसरण में आठ भूमि और तीन कटनी

१. पहली **चैत्यप्रासादभूमि** होती है, इसमें एक-एक जिनमंदिर के अंतराल में पांच-पांच प्रासाद रहते हैं।

२. दूसरी **खातिकाभूमि** रहती है, इसके स्वच्छ जल में हंस आदि कलरव करते रहते हैं और कमल आदि पुष्प खिले रहते हैं।

३. तीसरी **लताभूमि** — इसमें छहों ऋतुओं के पुष्प खिले रहते हैं।

४. चौथी **उपवनभूमि** — इसमें पूर्व आदि दिशा में क्रम से अशोक, सप्तच्छद, चंपक और आम्र के वन होते हैं। प्रत्येक वन में एक-एक चैत्यवृक्ष रहते हैं जिनमें ४-४ जिनप्रतिमाएं विराजमान रहती हैं।

५. पांचवी **ध्वजाभूमि** — इसमें सिंह, गज, वृषभ, गरुड़, मयूर, चन्द्र, सूर्य, हंस, पद्म और चक्र इन दस चिन्हों से सहित महाध्वजाएं और उनके आश्रित लघुध्वजाएं सब मिलाकर ४,७०,८८० होती हैं।

६. छठी **कल्पभूमि** — इसमें भूषणांग आदि दस प्रकार के कल्पवृक्ष होते हैं। चारों दिशा में क्रम से नमेरु, मंदार, संतानक और पारिजात ऐसे एक-एक सिद्धार्थवृक्ष होते हैं। इनमें चार-चार सिद्धप्रतिमाएं विराजमान रहती हैं ।

७. सातवीं **भवनभूमि** में भवन बने रहते हैं। इस भूमि के पार्श्व भागों में अर्हंत और सिद्धप्रतिमाओं से सहित नव-नव स्तूप होते हैं।

८. आठवीं **श्रीमण्डपभूमि** — इसमें १६ दीवालों के बीच में १२ कोठे हैं जिनमें १. गणधरादि मुनि, २. कल्पवासिनी देवी, ३. आर्यिका और श्राविका, ४. ज्योतिषी देवी, ५. व्यंतर देवी, ६. भवनवासिनी देवी, ७. भवनवासी देव, ८. व्यंतर देव, ९. ज्योतिष देव, १०. कल्पवासी देव, ११. चक्रवर्ती आदि मनुष्य और १२. सिंहादि तिर्यंच, ऐसे बारहगण के असंख्यातों भव्यजीव बैठकर धर्मोपदेश सुनते हैं। वहां पर रोग, शोक, जन्म, मरण, उपद्रव आदि बाधाएं नहीं होती हैं।

पुनः १६ सीढ़ी चढ़कर प्रथम कटनी पर चार धर्मचक्र और आठ मंगलद्रव्य आदि होते हैं, ८ सीढ़ी चढ़कर द्वितीय कटनी पर आठ महाध्वजाएं थीं, ८ सीढ़ी चढ़कर तृतीय कटनी पर गंधकुटी में सिंहासन पर लाल कमल की कर्णिका पर भगवान महावीर चार अंगुल अधर विराजमान थे। इनका मुख एक तरफ होते हुए भी चारों तरफ दिखने से ये **चतुर्मुखी ब्रह्मा** कहलाते थे। भगवान के पास अशोकवृक्ष, तीन छत्र, सिंहासन, भामंडल, चौंसठ चंवर, सुरपुष्पवृष्टि, दुंदुभि बाजे और हाथ जोड़े सभासद ये आठ महाप्रातिहार्य थे। वहीं पर मातंगयक्ष और सिद्धायिनी यक्षी विद्यमान थीं।

समवसरण लक्ष्मी से विभूषित उन महावीर भगवान को मेरा अनंतबार नमस्कार हो।

(तिलोयपण्णत्ति हरिवंशपुराण और समवसरण स्तोत्र के आधार से)

''समवसरण विंशतिका''

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

—दोहा —

सरस्वती लक्ष्मी जहाँ, नितप्रति करें प्रणाम।
पुण्यमयी उस धाम का, समवसरण है नाम।।

समवसरण का स्वरूप

छंद-विष्णुपद (कहाँ गये चक्री-बारहभावना)

जहाँ पहुँचते ही दर्शक का पाप शमन होता।
जहाँ पहुँचते ही मानी का मान गलन होता।।
सबको शरण प्रदाता वह ही समवसरण माना।
जिनवर की उस धर्मसभा को नमूँ परमधामा।।१।।

समवसरण के स्वामी

तीर्थंकर प्रभु तप करके बनते केवलज्ञानी।
वे ही बन अरिहंत कहाते समवसरण स्वामी।।
इन्द्राज्ञा से धनकुबेर रचता इक धर्मसभा।
नमूँ उसे नश जाती जिससे भव की पूर्ण व्यथा।।२।।

मानस्तंभ का महत्व

समवसरण की चार दिशा में मानस्तंभ बने।
जिनवर से बारह गुणिते ऊँचे अप्रतिम घने।।
मुख्यद्वार में जाते ही उनका दर्शन होता।
नमूँ वही मानस्तंभ जहाँ मिथ्यात्व वमन होता।।३।।

चैत्यप्रासाद भूमि

प्रथम कोट जो धूलिसाल उससे आगे भूमी।
चैत्यभवन एवं महलों से सहित प्रथम भूमी।।
देव मनुज क्रीड़ा करते वहाँ जाते पुण्यात्मा।
जिनप्रतिमा युत चैत्य भूमि को नमें महानात्मा।।४।।

खातिका भूमि

वेदी के पश्चात् खातिका भू में पुष्प खिले।
जो नव पुष्प कहीं नहिं मिलते वे भी वहाँ मिलें।।
जल से भरी खातिका में भव्यों के भव दिखते।
पावन समवसरण की भू को नमूँ सदा शुचि से।।५।।

लताभूमि

पुनः वेदिका के नन्तर है लताभूमि सुन्दर।
जाते जहाँ मनोरंजन करने को इन्द्र प्रवर।।
कहीं न दिखने वाली दिव्य लताएँ मन हरतीं।
नमूँ तृतिय भूमी को जो संताप सभी हरती।।६।।

उपवन भूमि

दूजे परकोटे के नन्तर उपवन भूमी है।
सप्तच्छद चंपक अशोक वन आम्र की पंक्ती हैं।।
चैत्यवृक्ष चारों दिश में एकेक कहे जाते।
नमूँ जिनेन्द्रों की प्रतिमा मन उपवन खिल जाते।।७।।

ध्वजा भूमि

वेदी के पश्चात् पाँचवी ध्वजाभूमि आती।
दशचिन्हों से युक्त ध्वजा केशरिया लहराती।।
परम अहिंसा का ध्वज लेकर जग में लहराओ।
भक्तिसहित प्रभु समवसरण को बंधु! शीश नावो।।८।।

कल्पभूमि

परकोटा तृतीय के नन्तर कल्पवृक्ष भूमी।
दशविध कल्पवृक्ष से जनता मांग करे पूरी।।
वहाँ बने सिद्धार्थ वृक्ष में सिद्धों की प्रतिमा।
उन सिद्धों को नमते ही निज कार्य सिद्धि करना।।९।।

भवनभूमि

पुनः वेदिका के नन्तर इक भवनभूमि आती।
नव नव स्तूपों से युत महिमा गाई जाती।।
अर्हत् सिद्धों की प्रतिमाएँ उनमें राज रहीं।
उसी भवनभूमी को वंदूँ जो है पुण्यमही।।१०।।

श्रीमण्डपभूमि

चौथा स्फटिकमयी परकोटा श्रीमण्डपभूमी।
समवसरण में सबसे अंतिम है अष्टमभूमी।।
वहाँ बने द्वादश कोठों में भव्यजीव बैठें।
नमन करूँ इस भू को जिसके सम्मुख जिन तिष्ठें।।११।।

बारह सभा वर्णन

गणधर मुनि साक्षात् प्रभू के वचन ग्रहण करते।
प्रथम सभा में इसीलिए स्थान ग्रहण करते।।
पुनः आर्यिका देव-देवियाँ मनुज पशू रहते।
जिनवर की दिव्यध्वनि सुनकर जन्म सफल करते।।१२।।

गंधकुटी की महिमा

समवसरण के मध्य गंधकुटी में हैं तीर्थंकर।
मुख है एक तथापी दिखते सभी ओर जिनवर।।
इसीलिए तो चतुर्मुखी ब्रह्मा माने जाते।
नमूँ प्रभू की गंधकुटी जहाँ दिव्य सुरभि व्यापे।।१३।।

तीर्थंकर महिमा

धर्मतीर्थ जो करें प्रवर्तित तीर्थंकर होते।
चार घातिया कर्म नाश कर वे जिनवर होते।।
उनके कल्याणक में रत्नों की वृष्टी होती।
उन्हें नमूँ तो निश्चित ही मेरी मुक्ती होगी।।१४।।

ॐकाररूप दिव्यध्वनि

तीर्थंकर की दिव्यध्वनि ॐकारमयी खिरती।
सात शतक अट्ठारह भाषामय हो परिणमती।।
समवसरण में देव मनुज पशु सभी समझ जाते।
नमूँ दिव्यध्वनि को जिसको केवलज्ञानी पाते।।१५।।

गणधर की महिमा

श्रीजिनेन्द्र की वाणी गणधर ही झेला करते।
चारज्ञान से द्वादशांग की रचना वे करते।।
भव्यों के प्रश्नों का उत्तर उनसे ही मिलता।
चौदह सौ बावन गणधर को नमूँ हृदय खिलता।।१६।।

प्रमुख श्रोता का पुण्य

दिव्यध्वनि को सुनने वाले एक प्रमुख श्रोता।
होते हैं प्रत्येक समवसरण में इक श्रोता।।
प्रथम भरत अंतिम श्रेणिक ने प्रश्न किये बहुते।
मैं भी बनूँ प्रमुख श्रोता वन्दन कर प्रभु पद में।।१७।।

समवसरण का प्रभाव

जहाँ-जहाँ तीर्थंकर का शुभ समवसरण बनता।
वहाँ-वहाँ दुर्भिक्ष आदि सारा संकट टलता।।
शेर गाय भी वैर छोड़ मैत्री धारण करते।
समवसरण के इस प्रभाव को नमूँ भक्ति करके।।१८।।

तीर्थंकर के श्रीविहार में स्वर्णकमल रचना

केवलज्ञानी तीर्थंकर जब श्रीविहार करते।
समवसरण विघटित हो जाता गगन गमन करते।।
देवप्रभू के चरणकमल तल स्वर्ण कमल रचते।
सोने में सुगंधि को वे चरितार्थ तभी करते।।१९।।

समवसरण दर्शन का महत्व

इस कलियुग में समवसरण साक्षात् नहीं बनते।
चूँकि यहाँ पर तीर्थंकर अब जन्म नहीं धरते।।
फिर भी ये जिनमंदिर भी हैं समवसरण माने।
कालचतुर्थ सदृश इनके दर्शन से भव हानें।।२०।।

समवसरण श्रीविहार की महिमा

ऐसा ही इक समवसरण इस धरती पर आया।
ऋषभदेव के उपदेशों को उसने फैलाया।।
गणिनी माता ज्ञानमती की सूझबूझ जानो।
कलियुग में भी सतयुग का दर्शन पाया मानो।।२१।।

उपसंहार

हे प्रभु! वर दो मुझको सच्चा समवसरण पाऊँ।
समवसरण के स्वामी तीर्थंकर का पद पाऊँ।।
जब तक वह पद मिले नहीं सम्यक्त्व नहीं छूटे।
उसके बाद "चंदनामति" चाहे सब कुछ छूटे।।१।।

—दोहा—

वीर संवत् पच्चीस सौ, चौबिस की कृति जान।
दुतिया कृष्ण आषाढ़ में, किया प्रभू गणगान।।१।।
समवसरण की भक्ति यह, पूर्ण करे सब आश।
यही चन्दनामति हृदय, में है शुभ अभिलाष।।२।।

चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली

महानुभावों,

अपने नगर के जिनमंदिरों में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के नाम निम्नानुसार लिखवाएं अथवा शिलापट्ट लगवाएं एवं इन तीर्थों की यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त करें।

प्रेरणा—गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

तीर्थंकर जन्मभूमि	तीर्थंकरों के नाम
१. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)	**—** श्री ऋषभदेव भगवान
	— श्री अजितनाथ भगवान
	— श्री अभिनंदननाथ भगवान
	— श्री सुमतिनाथ भगवान
	— श्री अनंतनाथ भगवान
२. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)	**—** श्री संभवनाथ भगवान
३. कौशाम्बी (उ.प्र.)	**—** श्री पद्मप्रभु भगवान
४. वाराणसी (उ.प्र.)	**—** श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
	— श्री पार्श्वनाथ भगवान
५. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र.	**—** श्री चन्द्रप्रभु भगवान
६. काकन्दी (देवरिया नि.-गोरखपुर) उ.प्र.	**—** श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
७. भद्रिकापुरी, इटखोरी (चतरा-झारखंड)	**—** श्री शीतलनाथ भगवान
८. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र.	**—** श्री श्रेयांसनाथ भगवान
९. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)	**—** श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
१०. कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.)	**—** श्री विमलनाथ भगवान
११. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)	**—** श्री धर्मनाथ भगवान
१२. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)	**—** श्री शांतिनाथ भगवान
	— श्री कुन्थुनाथ भगवान
	— श्री अरनाथ भगवान

१३. मिथिलापुरी	**—** श्री मल्लिनाथ भगवान
	— श्री नमिनाथ भगवान
१४. राजगृही (नालंदा-बिहार)	**—** श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
१५. शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.)	**—** श्री नेमिनाथ भगवान
१६. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)	**—** श्री महावीर भगवान

विशेष— ज्ञातव्य है कि पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी द्वारा तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों के विकास का क्रम सफलतापूर्वक जारी है। इस क्रम में हस्तिनापुर, अयोध्या, कुण्डलपुर (नालंदा), राजगृही, सिंहपुरी (सारनाथ) में सुन्दर निर्माण एवं विकास के कार्य सम्पन्न हुए हैं, जिससे कि प्राचीन तीर्थभूमियाँ प्रकाश में आई हैं तथा उनका राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार हुआ है। इसी क्रम में वर्तमान में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी का भी निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। आप भी अपने आसपास के क्षेत्र में स्थित तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास हेतु समाज में जागरुकता पैदा करें एवं संगठित होकर उन प्राचीन तीर्थभूमियों का जीर्णोद्धार करें। इस कार्य में हम सदैव आपके साथ हैं।

निवेदक —**अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी**

अध्यक्ष —**कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन, जम्बूद्वीप**

प्रधान कार्यालय — **जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**
फोन नं.-०१२३३-२८०१८४, २८०२३६

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

१. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-६।
२. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
३. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-१९, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
४. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
५. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
६. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
७. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-९२।
८. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
९. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
१०. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
११. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
१२. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-९२।
१३. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
१४. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
१५. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
१६. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
१७. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-४, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

१. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
२. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, ७९२ विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
३. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
४. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
५. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
६. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
७. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
८. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
९. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
१०. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
११. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
१२. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
१३. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
१४. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
१५. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-७।
१६. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
१७. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
१८. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
१९. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)

भगवान महावीर समवसरण विधान

मण्डल का नक्शा

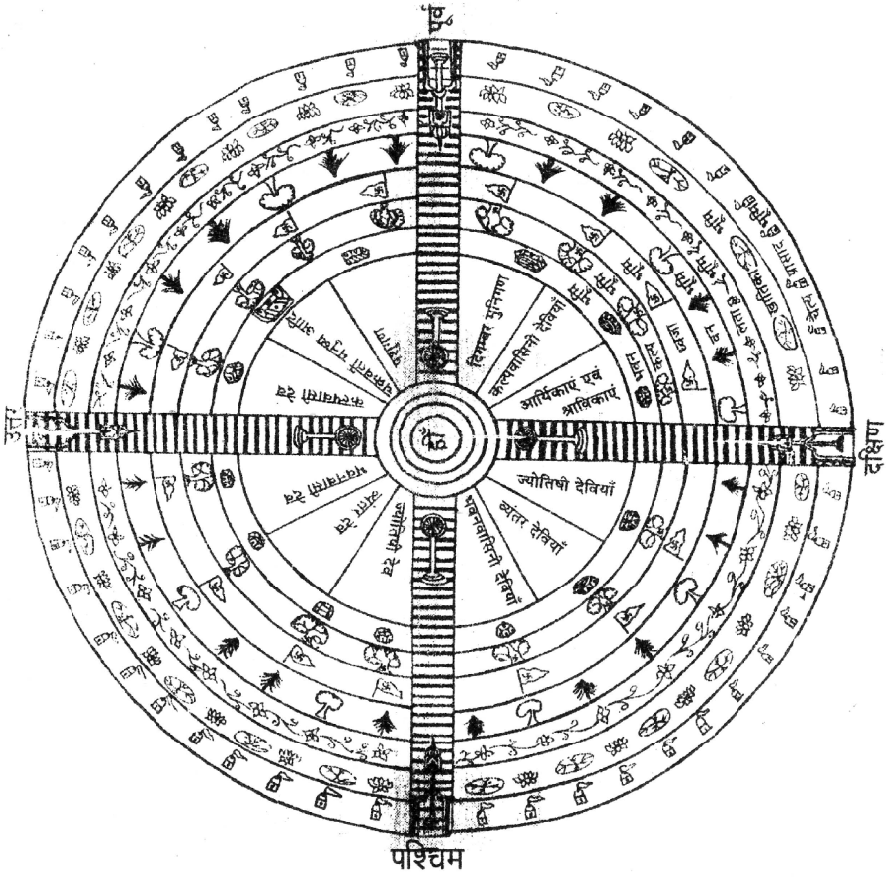

महावीर समवसरण विधान

महावीर वंदना

वसंततिलकाछंद —

सिद्धार्थराजकुलमण्डनवीरनाथः।
जातः सुकुण्डलपुरे त्रिशलाजनन्यां।।
सिद्धिप्रियः सकलभव्यहितंकरो यः।
श्रीसन्मतिर्वितनुतात् किल सन्मतिं मे।।१।।
कैवल्यबोधरविदीधितिभिःसमन्तात् ।
दुष्कर्मपंकिलभुवं किल शोषयन् यः।।
भव्यस्य चित्तजलज-प्रविबोधकारी।
तं सन्मतिं सुरनुतं सततं स्तवीमि।।२।।
पावापुरे सरसि पद्मयुते मनोज्ञे।
योगं निरुध्य खलु कर्म वनं ह्यधाक्षीत् ।।
लेभे सुमुक्तिललना-मुपमाव्यतीताम्।
भेजे त्वनन्तसुखधाम नमोऽस्तु तस्मै।।३।।

शिखरिणीछंद —

महावीरो धीरस्त्रिदशपतिसंपूज्यचरणः।
त्रिलोकेशो व्याप्तो महितशुचिबोधो जिनपतिः।।
नमामि त्वां नित्यं निखिलजगदातापहरणं।
विधेया मे शक्तिः सकलकलुषस्यापहरणे।।४।।

पृथ्वीछंद —नमोऽस्तु परमात्मने सकललोकचूडामणे!
नमोऽस्तु जिनवीर! धीर! भगवन्! महावीर! ते।।
नमोऽस्तु जिनपुंगवाय जिनवर्धमानाय ते।
नमोऽस्तु जिनसन्मते! वितनु ज्ञानलक्ष्मीं मम।।५।।

(भाषानुवाद —चौबोल छंद)

श्रीसिद्धार्थ नृपति के नंदन, नाथवंश मण्डन महावीर।
कुण्डलपुर में श्रीत्रिशला, माता से जन्म लिया तुम वीर।।
सिद्धिवधूप्रिय! सकलभव्यजन, के हितकारी वीर प्रभू।
श्रीसन्मतिजिन! मुझको सन्मति, दीजे नितप्रति तुम्हें भजूँ।।१।।
दुरितपंक से पंकिल पृथ्वी, कीच सहित सर्वत्र अहो!
केवलज्ञान सूर्य किरणों से, सदा सुखाते रहते हो।।
भव्यजनों के चित्त कमल को, सदा खिलाते हो भगवन् ।
सुरगण पूजित सन्मतिजिन का, करूँ भक्ति से सदा स्तवन।।२।।
पावापुर के बीच कमलयुत, जल से पूर्ण सरोवर है।
वहीं योग का निरोध करके, कर्माटवी जलायी है।।
उपमा रहित मुक्तिललना को, प्राप्त किया शिवपुर जाके।
अनंत सुखमय धाम मुक्तिपति, है नमोऽस्तु तुमको रुचि से।।३।।
त्रिदशपती से पूज्य चरण, हे महावीर! तुम धीर महान् ।
त्रिभुवनपति हे जगत् व्याप्त, शुचिमहित ज्ञान जिनपति गुणखान।।
निखिल जगत् संतापहरण प्रभु, तुमको मेरा नित्य नमन।
सकल कलुष के नाश करन को, मुझे शक्ति दीजे भगवन् ।।४।।
नमोऽस्तु तुमको सकल लोक के, चूड़ामणि हे परमात्मन्!
नमोऽस्तु तुमको वीर! धीर! महावीरप्रभो! त्रिशलानंदन!
नमोऽस्तु तुमको जिनपुंगव! जिनवर्धमान! हे प्रभु अतिवीर!
नमोऽस्तु तुमको सन्मति! मुझको, ज्ञानसंपदा दो जिनवीर!।।५।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

महावीर समवसरण विधान पूजा

स्थापना —नरेन्द्र छंद —

धनपति निर्मित समवसरण में, महावीर प्रभु राजें।
स्वर्णिम आभा देह छवी को, देख सूर्य भी लाजें।।
अतः आप के श्रीचरणों में, हुए समर्पित भविजन।
अन्तर अगणित गुणमणि प्रभु का, करूँ यहाँ आह्वानन।।१।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगअनन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्वित श्री महावीरजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अन्तरंगअनन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्वित श्री महावीरजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अन्तरंगअनन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्वित श्री महावीरजिनेंद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक —गीताछंद —

हे नाथ! जग में जन्म व्याधी, बहुत ही दुःख दे रही।
अब मेट दीजे इसलिए, त्रयधार दे पूजूँ यहीं।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।१।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! इस यमराज का, संताप अब नहिं सहन है।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, चर्चूं सुगंधित गंध है।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।२।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे ज्ञान के बहु, खंड खंड हुए यहाँ।
कर दो अखंडित ज्ञान तंदुल, पुँज से पूजूँ यहाँ।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।३।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! भवशर विश्वजेता, आप ही इसके जयी।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, बहु पुष्प अर्पूं मैं यहीं।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।४।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! सब जग अन्न खाया, भूख अब तक ना मिटी।
प्रभु भूख व्याधी मेट दो, इस हेतु चरु अर्पूं यहीं।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।५।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्न दीपक से कभी, मन का अंधेरा न भगा।
हे नाथ! तुम आरति करत ही, ज्ञान का सूरज उगा।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।६।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे कर्म कैसे, नष्ट हों यह युक्ति दो।
मैं धूप खेवूँ अग्नि में, ये कर्मबैरी भस्म हों।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।७।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! चाहा बहुत फल, बहुते चरण में नत हुआ।
नहिं तृप्ति पायी इसलिए, फल सरस तुम अर्पण किया।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।८।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! निज के रत्नत्रय, अनमोल श्रेष्ठ अनर्घ्य हैं।
मुझको दिलावो शीघ्र ही, इस हेतु अर्घ्य समर्घ्य है।।
महावीर प्रभु के समवसृति की, मैं करूँ आराधना।
अन्तर गुणों को भी जजूँ, हो पूर्ण मेरी कामना।।९।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीर-जिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—सोरठा —

वीर प्रभू पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम स्वाद, तिहुँ जग में भी शांति हो।।१०।।

शान्तये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार, जिनपद पुष्पांजलि करूँ।
भरे सौख्य भंडार, रोग शोक संकट टलें।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

-सोरठा- **जिनवर चरण सरोज, पुष्पांजलि से पूजते।**
मिटे सर्वदुख शोक, सुख संपति होवे सदा।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

मानस्तंभ के ४ अर्घ्य —नरेन्द्र छंद-

पच्चिस सौ साठ[१] सुवर्ष पूर्व ही, विपुलाचल पर्वत पर।
महावीर का समवसरण था, बना यहां अति सुंदर।।
भरत क्षेत्र में आज उन्हीं का, शासन इस धरती पर।
मानस्तंभ पूर्व दिशका मैं, पूजूं अतिशय रुचिधर।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिसमवसरणस्थितपूर्वदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

महावीर अतिवीर वीर प्रभु, वर्द्धमान जिन सन्मति।
पांच नाम से आप प्रथित हैं, दीजे मुझको सन्मति।।
समवसरण में आप विराजें, द्वादश गण के ईश्वर।
मानस्तंभ दक्षिणी दिश का, पूजूँ अतिशय रुचिधर।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिसमवसरणस्थितदक्षिणदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

छ्यासठ दिन तक खिरी नहीं ध्वनि, तब सौधर्म सुरेश्वर।
इन्द्रभूति गौतम को लाया, वे ही हुए गणेश्वर।।
समवसरण में सब जन तर्पित, किया धर्म वर्षा कर।
मानस्तंभ पश्चिमी दिश का, पूजूँ अतिशय रुचिधर।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिसमवसरणस्थितपश्चिमदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

---

१. ईसवी सन् २००३ में यह विधान रचा गया, तब तक २५६० वर्ष हुए थे।

समवसरण की महिमा न्यारी, कह न सके शारद मां।
लोकोत्तर सम्पत्ति वहां पर, लोकोत्तर ही गरिमा।।
ऐसे समवसरण का दर्शन, शीघ्र मिले यह दो वर।
मानस्तंभ उत्तरी दिश का, पूजूँ अतिशय रुचिधर।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिसमवसरणस्थितउत्तरदिङ्मानस्तंभचतुर्दिक्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

—पूर्णार्घ्य —

महावीर तीर्थंकर जिनके, समवसरण में होते।
मानस्तंभ सु चार कहें जो, मान पंक को धोते।।
गणधर मुनिगण सुरपति नरपति, खगपति वंदन करते।
मैं पूजूँ पूर्णार्घ चढ़ाकर, पुण्य पूर्ण ये करते।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिसमवसरणस्थितचतुःमानस्तम्भसर्वजिनप्रतिमाभ्यःपूर्णार्घ्यं.....।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

चैत्यप्रासाद भूमि अर्घ्य —दोहा —

महावीर सिद्धार्थ सुत, त्रिभुवन पिता जिनेश।
समवसरण के जिनभवन, जजूँ सु भक्ति हमेश।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिसमवसरणस्थितचैत्यप्रासादभूमिसंबंधिजिनमंदिरजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

खातिका भूमि अर्घ्य —मोतीदाम छंद —

महाकल्पद्रुम वीर जिनेश, सभी इच्छित पूरो परमेश।
जजूँ उन समवसरण अभिराम, द्वितिय खाई भूसहित ललाम।१।।

ॐ ह्रीं खातिकाभूमिमंडितमहावीरजिनसमवसरणाय अर्घ्यं.....।

लता भूमि अर्घ्य —नंदीश्वर चाल —

श्री महति वीर महावीर, कर्म विनाशक हैं।
जो जजें हरें भवपीर, प्रभु सुखदायक हैं।।
बल्लीवन सुरभित पुष्प, वापी पर्वत युत।
इस विभव सहित जिन ईश, पूजूँ त्रिकरण युत।।१।।

ॐ ह्रीं लतावनभूमिमंडितमहावीरजिनसमवसरणाय अर्घ्यं.....।

उपवन भूमि के ४ अर्घ्य —दोहा–

समवसरण जिन वीर का, अतिशय गुण भण्डार।
जजूँ अशोक तरु बिंब को, सर्व सौख्य भण्डार।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपूर्वदिक्अशोकचैत्यवृक्षसंबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

जिन सन्मति दें सन्मती, कुमति विनाशनहार।
जजूँ सप्तछद बिंबको, सर्व सौख्य भण्डार।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिदक्षिणदिक्सप्तच्छदचैत्यवृक्षसंबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

वर्द्धमान भगवान का, समवसरण सुखकार।
चंपक तरु प्रतिमा जजूँ, सर्व सौख्य भण्डार।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिपश्चिमदिक्चंपकचैत्यवृक्षसंबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

वीर प्रभू का नाम है, स्वातम निधि दातार।
आम्र वृक्ष प्रतिमा जजूँ, सर्व सौख्य भण्डार।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिउत्तरदिक्आम्रचैत्यवृक्षसंबंधिचतुर्मानस्तम्भसहितचतुर्जिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

—पूर्णार्घ्य —शंभुछंद —

सन्मति जिनवर के समवसरण में, चौथी उपवन भू मानी है।
चारों दिश इक इक चैत्यवृक्ष, चहुंदिश जिन प्रतिमा मानी हैं।।
चारों दिश की जिनप्रतिमा के, सन्मुख में मानस्तंभ खड़े।
मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ा करके, दिन पर दिन सुख सौभाग्य बढ़े।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितउपवनभूमिसंबंधिचतुःचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनप्रतिमा–तावत्प्रमाणमानस्तंभसंबंधिसर्वप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।
शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

ध्वजभूमि अर्घ्य-स्रग्विणी छंद —

वीर अतिवीर महावीर सन्मति प्रभो।
वो लहें सर्व सुख जो जजें आपको।।
पांचवी ध्वज धरा शोभती है वहाँ।
मैं जजूँ जिन समोसर्ण को नित यहाँ।।१।।

ॐ ह्रीं ध्वजभूमिमंडितमहावीरजिनसमवसरणाय अर्घ्यं.....।

कल्पवृक्षभूमि के ४ अर्घ्य —चौपाई छंद —

समवसरण जिनगुण मणिमाली, जजत बने नर महिमाशाली।
तरु नमेरु में सिद्धन मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपूर्वदिक्नमेरुसिद्धार्थवृक्षमूल-भागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

समवसरण में राजें वीरा, महावीर सन्मति अतिवीरा।
तरु मंदार सिद्ध की मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिदक्षिणदिक्मंदारसिद्धार्थवृक्षमूल भागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

वर्द्धमान जिनवर को वंदे, पाप अद्रि हों सौ सौ खंडे।
संतानक तरु सिद्धन मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिपश्चिमदिक्संतानकसिद्धार्थवृक्ष्मूल भागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

सर्वोत्तम कल्पद्रुम वीरा, बिन मांगे फल पावें धीरा।
पारिजात तरु सिद्धन मूर्ती, पूजत हो मुझ वांछा पूर्ती।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पवृक्षभूमिउत्तरदिक्पारिजातसिद्धार्थवृक्षमूल-भागविराजमानचतुर्मानस्तम्भसहितचतुःसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य —गीता छंद

इस कल्पतरु की भूमि में, सिद्धार्थ तरु चारों दिशी।
श्री सिद्धबिंब विराजते, प्रत्येक तरु के चहुँदिशी।।

एकेक मानस्तंभ हैं, प्रत्येक प्रतिमा के निकट।
उनमें चतुर्दिश बिंब जिनवर, पूजते ही शिव निकट।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितकल्पतरुभूमिसंबंधिचतुःसिद्धार्थवृक्षमूल-भागविराजमानषोडशसिद्धप्रतिमातत्संबंधितावत्प्रमाणमानस्तंभस्थितसर्वसिद्ध-प्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

भवनभूमि के ४ अर्घ्य —सोरठा —

महावीर भगवंत, कल्पवृक्ष दाता तुम्हीं।
नवस्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिप्रथमवीथीसंबंधिनवस्तूपमध्य-विराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

भविजन वहाँ असंख्य, समवसरण में बैठते।
नवस्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिद्वितीयवीथीसंबंधिनवस्तूपमध्य-विराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

सिद्धारथ के नंद, त्रिभुवन जन के हो पिता।
नवस्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितभवनभूमितृतीयवीथीसंबंधिनवस्तूपमध्य-विराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

समवसरण जग वंद्य, भवन भूमि से शोभता।
नवस्तूप सुर वंद्य, जिनप्रतिमा पूजूँ सदा।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिचतुर्थवीथीसंबंधिनवस्तूपमध्य-विराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य —शंभु छंद

प्रत्येक गली के नव नव ये, चारों के सब छत्तीस हुये।
महावीर समवसृति के स्तूप, अर्हंत सिद्ध जिन बिंब लिये।।

शिर छत्र फिरें अरु चंवर ढुरें, वंदन वारों से शोभ रहें।
हम इनकी जिनप्रतिमाओं को, नित अर्घ्य चढ़ाकर कर्मदहें।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितभवनभूमिमध्यवीथीसंबंधिषट्त्रिंशत्स्तूप-मध्यविराजमानसर्वजिनसिद्धप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

श्रीमंडपभूमि अर्घ्य —शंभु छंद —

महावीर प्रभू का समवसरण, है चार कोश विस्तार धरे।
उसमें भी त्रिभुवन की संपत्, धनपति लाकर एकत्र करे।।
यह वीर प्रभू का ही प्रभाव, जो भव्य असंख्ये ध्वनि सुनते।
मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर नित, मेरे भी मनवाञ्छित फलते।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपभूमिमंडितश्रीमहावीरजिनसमवसरणाय अर्घ्यं.....।

प्रथम कटनी स्थित धर्मचक्र के ४ अर्घ्य —अडिल्लछंद —

महावीर जिन समवसरण अतिशय भरा।
खाई लता बगीचे से चहुंदिश हरा।।
सप्त परम स्थान, हेतु पूजा करूं।
धर्मचक्र को जजूं, मुक्ति लक्ष्मी वरूं।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं.....।

अन्धे लंगड़े लूले, बहिरे स्वस्थ हों।
बीस हजार सीढ़ियां, चढ़ जिन भक्त हों।।
सप्त परम स्थान, हेतु पूजा करूं।
धर्मचक्र को जजूं, मुक्ति लक्ष्मी वरूं।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं.....।

धर्म चक्र के हजार, आरे चमकते।
अंधकार जन मन का, हरते दमकते।।
सप्त परम स्थान, हेतु पूजा करूं।
धर्मचक्र को जजूं, मुक्ति लक्ष्मी वरूं।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं.....।

जो परोक्ष में समवसरण को पूजते।
वे निश्चित प्रत्यक्ष, दर्श को पावते।।
सप्त परम स्थान, हेतु अर्चा करूं।
धर्मचक्र को जजूं, मुक्तिकांता वरूं।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य —दोहा

महावीर जिनराज के, चार कहे वृष चक्र।
धर्मचक्र को नित नमूँ, पूजत हो मम भद्र।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिविराजमानचतुर्धर्मचक्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

द्वितीय कटनी का अर्घ्य —स्रग्विणी छंद —

श्री महावीर प्रभु में महावीरता।
मृत्यु को मारने की जगे वीरता।।
पूजहूं मैं ध्वजा आठ भक्ती भरे।
सिद्ध के आठ गुण सम धवल फरहरें।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितद्वितीयपीठोपरिअष्टमहाध्वजाभ्यः अर्घ्यं.....।

गंधकुटी अर्घ्य —गीता छंद —

महावीर प्रभु का आज भी, शासन जगत में छा रहा।
जो हैं अहिंसा प्रिय उन्हों के, चित्त को अति भा रहा।।
वर ज्ञान आदिक क्षायिकी, मिल जाँय केवल लब्धियाँ।
जिन गंधकुटि को पूजहूँ, मिल जाँय आतम सिद्धियाँ।। १।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थिततृतीयपीठोपरिगंधकुट्यै अर्घ्यं.....।

४६ गुणों के ४६ अर्घ्य —

सोरठा — **जिनवर गुणमणि तेज, सर्व लोक में व्यापता।**
हो मुझ ज्ञान अशेष, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

—शंभु छन्द —

तीर्थंकर प्रभु के जन्म समय से, दश अतिशय सुखदायी हैं।
उनके तनु में नहिं हो पसेव, यह अतिशय गुण मन भायी है।।
मैं पूजूं नित इस अतिशय को, यह सब कलिमल को धोवेगा।
परमानंदामृत पान करा, निज के गुणमणि को देवेगा।।१।।

ॐ ह्रीं निःस्वेदत्वसहजातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

माता की कुक्षी से जन्में, औदारिक तनु मानव का है।
फिर भी मल मूत्र नहीं तुममें, यह अतिशय पुण्य उदय का है।।
मैं पूजूं नित इस अतिशय को, यह सब कलिमल को धोवेगा।
परमानंदामृत पान करा, निज के गुणमणि को देवेगा।।२।।

ॐ ह्रीं निर्मलतासहजातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु तन में श्वेत रुधिर पय सम, यह अतिशय तीर्थंकर के हो।
अतएव मात सम त्रिभुवन जन, पोषण करते उदार मन हो।।
मैं पूजूं नित इस अतिशय को, यह सब कलिमल को धोवेगा।
परमानंदामृत पान करा, निज के गुणमणि को देवेगा।।३।।

ॐ ह्रीं क्षीरसमधवलरुधिरत्वसहजातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।

उत्तम संहनन सुवज्रवृषभनाराच कहाता शक्ति धरे।
यह अन्य जनों को सुलभ तथापी, तुममें अतिशय नाम धरे।।
मैं पूजूं नित इस अतिशय को, यह सब कलिमल को धोवेगा।
परमानंदामृत पान करा, निज के गुणमणि को देवेगा।।४।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननसहजातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु तन में एक एक अवयव, सब माप सहित अतिशय सुन्दर।
यह समचतुरस्त्र नाम का ही, संस्थान कहा त्रिभुवन मनहर।।
मैं पूजूं नित इस अतिशय को, यह सब कलिमल को धोवेगा।
परमानंदामृत पान करा, निज के गुणमणि को देवेगा।।५।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्त्रसंस्थानसहजातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

त्रिभुवन में उपमारहित रूप, अतिसुंदर अणुओं से निर्मित।
सुरपति निज नेत्र हजार बना, प्रभु को निरखे फिर भी अतृप्त।।
मैं पूजूं नित इस अतिशय को, यह सब कलिमल को धोवेगा।
परमानंदामृत पान करा, निज के गुणमणि को देवेगा।।६।।

ॐ ह्रीं अनुपमरूपसहजातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

नव चंपक की उत्तम सुगंध, सम देह सुगंधित प्रभु का है।
यह अतिशय अन्य मनुज तन में, नहिं कभी प्राप्त हो सकता है।।
मैं पूजूं नित इस अतिशय को, यह सब कलिमल को धोवेगा।
परमानंदामृत पान करा, निज के गुणमणि को देवेगा।।७।।

ॐ ह्रीं सौगंध्यसहजातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

शुभ एक हजार आठ लक्षण, प्रभु तन का अतिशय कहते हैं।
यह तीन जगत् में भी उत्तम, अतएव इंद्र सब नमते हैं।।
मैं पूजूं नित इस अतिशय को, यह सब कलिमल को धोवेगा।
परमानंदामृत पान करा, निज के गुणमणि को देवेगा।।८।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरसहस्त्रशुभलक्षणसहजातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

तन में अनंत[१] बल वीर्य रहे, जन्मत ही यह अतिशय प्रगटे।
अतएव हजार हजार बड़े, कलशों से न्हवन भि झेल सकें।।
मैं पूजूं नित इस अतिशय को, यह सब कलिमल को धोवेगा।
परमानंदामृत पान करा, निज के गुणमणि को देवेगा।।९।।

ॐ ह्रीं अनन्तबलवीर्यसहजातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

हितमित सुमधुर वाणी प्रभु की, जनमन को अतिशय प्रिय लगती।
त्रिभुवन हितकारी भावों से, यह अद्भुत वचन शक्ति मिलती।।
मैं पूजूं नित इस अतिशय को, यह सब कलिमल को धोवेगा।
परमानंदामृत पान करा, निज के गुणमणि को देवेगा।।१०।।

ॐ ह्रीं प्रियहितमधुरवचनसहजातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

---

१. अणंत्तबलविरियं। तिलोयपण्णत्ति पृ. २६३।

—नरेंद्र छंद —

केवल ज्योति प्रगट होते ही, इक[1] दश अतिशय होते हैं।
चारों दिश में सुभिक्ष होवे, चउ चउसौ कोसों में।।
घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझ में केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूं।।११।।

ॐ ह्रीं गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षताकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।

ज्ञान प्रगट होते ही जिनवर, गगन गमन करते हैं।
बीस हजार हाथ ऊपर जा, अधर सिंहासन पर हैं।।
घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझ में केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूं।।१२।।

ॐ ह्रीं गगनगमनत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु के गमन शरीर आदिक से, प्राणी वध नहिं होवे।
करुणा सिंधु अभय दाता को, पूजत निर्भय होवें।।
घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझ में केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूं।।१३।।

ॐ ह्रीं प्राणिवधाभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

कोटी पूर्व वर्ष आयू में, कुछ कम ही वर्षों में।
केवलि का उत्कृष्ट काल यह, बिन भोजन है तन में।।
घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझ में केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूं।।१४।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

देव मनुज तिर्यंच आदि, उपसर्ग नहीं कर सकते।
केवलि प्रभु के कर्म असाता, साता में ही फलते।।
घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझ में केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूं।।१५।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभावकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

१. तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ में ११ अतिशय माने हैं।

समवसरण की गोल सभा में, चहुंदिश प्रभु मुख दीखे।
चतुर्मुखी ब्रह्मा यद्यपि ये, पूर्व उदङ् मुख तिष्ठे।।
घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझ में केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूं।।१६।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

परमौदारिक पुद्गल तनु भी, छाया नहीं पड़े है।
केवलज्ञान सूर्य होकर भी, सबको छांव करे हैं।।
घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझ में केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूं।।१७।।

ॐ ह्रीं छायारहितकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

नेत्रों की पलकें नहिं झपकें, निर्निमेष दृष्टी है।
जो पूजें वे भव्य लहें तुम, सदा कृपादृष्टी है।।
घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझ में केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूं।।१८।।

ॐ ह्रीं पक्ष्मस्पंदरहितकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

त्रिभुवन में जितनी विद्या हैं, सबके ईश्वर प्रभु हैं।
जो भवि पूजें वे सब विद्या, अतिशय प्राप्त करे हैं।।
घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझ में केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूं।।१९।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वरताकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

केश और नख बढ़े न प्रभु के, चिच्चैतन्य प्रभू हैं।
दिव्यदेह को धारण करते, त्रिभुवन एक विभू हैं।।
घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझ में केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूं।।२०।।

ॐ ह्रीं समाननखकेशत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

अनुपम दिव्यध्वनि[१] त्रय संध्या, मुहूर्त त्रय त्रय खिरती।
चारकोश तक सुनते भविजन, सब भाषामय बनती।।
घाति कर्म के क्षय से अतिशय, मन वच तन से पूजूं।
मुझ में केवलज्ञान सौख्य हो, भव भव दुख से छूटूं।।२१।।

ॐ ह्रीं अक्षरानक्षरात्मकसर्वभाषामयदिव्यध्वनिकेवलज्ञानातिशयगुणमंडित-महावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

—शंभु छंद —

प्रभु के श्रीविहार में दशदिश, संख्यात कोस तक असमय में।
सब ऋतु के फल फलते व फूल, खिल जाते हैं वन उपवन में।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।। २२।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादिशोभिततरुपरिणामदेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

कंटक धूली को दूर करे, जनमन हर सुखद पवन बहती।
प्रभु के विहार में बहुत दूर तक, स्वच्छ हुई भूमी दिखती।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।। २३।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमितधूलिकंटकादिदेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

सब जीव पूर्व के बैर छोड़, आपस में प्रीती से रहते।
इस अतिशय पूजत निंदा कलह, अशांति बैर निश्चित टलते।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।। २४।।

ॐ ह्रीं सर्वजनमैत्रीभावदेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

१. तिलोयपण्णत्ति में दिव्यध्वनि केवलज्ञान का अतिशय मानकर ११ अतिशय माने हैं।

पृथिवी दर्पण तल सदृश स्वच्छ, अरु रत्नमयी हो जाती है।
जहं जहं प्रभु विहरण करते हैं, वह भूमि रम्य मन भाती है।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है ।।२५।।

ॐ ह्रीं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

सुर मेघ कुमार सुगंध शीत, जल कण की वर्षा करते हैं।
इंद्राज्ञा से सब देववृंद, प्रभु का अतिशय विस्तरते हैं।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।।२६।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

शाली जौ आदिक धान्यभरित, खेती फल से झुक जाती है।
सब तरफ खेत हों हरे भरे, यह महिमा सुखद सुहाती है।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।।२७।।

ॐ ह्रीं फलभारनम्रशालिदेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

सब जन मन परमानंद भरें, जहं जहं प्रभु विचरण करते हैं।
मुनिजन भी आत्म सुधा पीकर, क्रम से शिवरमणी वरते हैं।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।।२८।।

ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानन्दत्वदेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

वायू कुमार जिन भक्तीरत, सुख शीतल पवन चलाते हैं।
जिन विहरण में अनुकूल पवन, उससे जन व्याधि नशाते हैं।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।।२९।।

ॐ ह्रीं विहरणमनुगतवायुत्वदेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।

सब कुंए सरोवर बावड़ियाँ, निर्मल जल से भर जाते हैं।
इस चमत्कार को देख भव्य, निज पुण्य कोष भर लाते हैं।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।।३०।।

ॐ ह्रीं निर्मलजलपूर्णकूपसरोवरादिदेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्रायअर्घ्यं...।

आकाश धूम्र उल्कादि रहित, अतिस्वच्छ शरद्ऋतु सम होता।
जिनवर भक्ती वंदन करते, भविजन मन भी निर्मल होता।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।।३१।।

ॐ ह्रीं शरत्कालवन्निर्मलाकाशदेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं....।

सब जन ही रोग शोक संकट, बाधाओं से छूट जाते हैं।
जहं जहं प्रभु विहरण करते हैं, सर्वोपद्रव टल जाते हैं।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।।३२।।

ॐ ह्रीं सर्वजनरोगशोकबाधारहितत्वदेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं...।

यक्षेंद्र चार दिश मस्तक पर, शुचि धर्मचक्र धारण करते।
उनमें हजार आरे अपनी, किरणों से अतिशय चमचमते।।
तीर्थंकर जिनका यह महात्म्य, यह अतिशय सब सुखदायी है।
मैं पूजूं रुचि से मुझको यह, परमानंदामृत दायी है।।३३।।

ॐ ह्रीं यक्षेंद्रमस्तकोपरिस्थितधर्मचक्रचतुष्टयदेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

दिश विदिशा में छप्पन सुवर्ण, पंकज खिलते सुरभी करते।
इक पाद पीठ मंगल सु द्रव्य, पूजन सु द्रव्य सुरगण धरते।।
प्रभु के विहार में चरण तले, सुर स्वर्ण कमल रखते जाते।
इन तेरह[१] सुरकृत अतिशय को, हम पूजत ही सम सुख पाते।।३४।।

ॐ ह्रीं जिनचरणकमलतलस्वर्णकमलरचनादेवोपनीतातिशयगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

१. तिलोयपण्णत्ति में १३ माने हैं।

—गीता छंद —

वर प्रातिहार्य सु आठ में, तरुवर अशोक विराजता।
मरकत मणी के पत्र पुष्पों, से खिला अति भासता।।
निज तीर्थंकर ऊँचाई से, बारह गुणे तुंग फरहरे।
इसकी करें हम अर्चना, यह शोक सब मन का हरे।।३५।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

प्रभु शीश पर त्रय छत्र शोभें, मोतियों की हैं लरें।
प्रभु तीन जग के ईश हैं, यह सूचना करती फिरें।।
क्या चंद्रमा नक्षत्रगण, को साथ ले भक्ती करें।
इस कल्पना युत छत्र त्रय की, हम सदा अर्चा करें।।३६।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

निर्मल फटिक मणि से बना, बहुरत्न से चित्रित हुआ।
जिननाथ सिंहासन दिपे, निजतेज से नभ को छुआ।।
इस पीठ पर तीर्थेश, चतुरंगुल अधर ही राजते।
यह प्रातिहार्य महान जो, जन पूजते निज भासते।।३७।।

ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्यगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

गणधर मुनीगण देव देवी, चक्रि नर पशु आदि सब।
निज निजी कोठे बैठ अंजलि, जोड़ते सुप्रसन्न मुख।।
इन बारहों गण से घिरे, तीर्थेश त्रिभुवन सूर्य हैं।
यह प्रातिहार्य महान इसको, जजत जन जग सूर्य हैं।।३८।।

ॐ ह्रीं द्वादशगणपरिवेष्टितमहाप्रातिहार्यगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

सब आइये जिन शरण में, मानों कहे यह दुंदुभी।
सब देव गण मिलकर बजाते, बहुत बाजे दुंदुभी।।
यह प्रातिहार्य महान इसको, वाद्य ध्वनि से पूजते।
सुरगण बजावें वाद्य उनके, सामने बहु भक्ति से।।३९।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्यगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

सुरगण गगन से कल्पतरु के, पुष्प बहु वर्षा रहें।
यह वर्ण वर्ण सुगंध खिलते, पुष्प जन मन भा रहे।।
यह प्रातिहार्य महान इसको, सुमन अर्घ लिये जजूँ।
अतिशय सुयश सुख प्राप्तकर, सब अशुभ अपयश से बचूँ।।४०।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

यह कोटि भास्कर तेज हरता, प्रभा मंडल नाथ का।
जन दर्श से निज सात भव को, देखते उसमें सदा।।
यह प्रातिहार्य महान इसको, पूजहूँ अतिचाव से।
निज आत्म तेज अपूर्व पाकर, छूटहूँ भव दाव से।।४१।।

ॐ ह्रीं भामंडलमहाप्रातिहार्यगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

सुर यक्षगण चौंसठ चंवर, जिनराज पर ढोरें सदा।
ये चंद्रसम उज्ज्वल चंवर, हरते सभी मन की व्यथा।।
यह प्रातिहार्य महान इसको, पूजहूँ श्रद्धा धरे।
जो जजें चामर ढोरकर, वे उच्च पद के सुख भरें।।४२।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरमहाप्रातिहार्यगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

—नाराच छंद —

तीन लोक तीनकाल की समस्त वस्तु को।
एक साथ जानता अनंत ज्ञान विश्व को।।
जो अनंतज्ञान युक्त इन्द्र अर्चते जिन्हें।
पूजहूँ सदा उन्हें अनंतज्ञान हेतु मैं।।४३।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

लोक अरु अलोक के समस्त ही पदार्थ को।
एक साथ देखता अनंत दर्श सर्व को।।
जो अनंत दर्श युक्त इन्द्र अर्चते उन्हें।
पूजहूँ सदा उन्हें अनंत दर्श हेतु मैं।।४४।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

बाधहीन जो अनंत सौख्य भोगते सदा।
हो भले अनंतकाल आवते न ह्यां कदा।।
वे अनंत सौख्य युक्त इन्द्र अर्चते उन्हें।
पूजहूँ सदा तिन्हें अनंत सौख्य हेतु मैं।।४५।।

ॐ ह्रीं अनंतसौख्यगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

जो अनंतवीर्यवान अंतराय को हने।
तिष्ठते अनंत काल श्रम नहीं कभी उन्हें।।
वे अनंत शक्ति युक्त इन्द्र अर्चते उन्हें।
पूजहूँ सदा तिन्हें अनंत वीर्य हेतु मैं।।४६।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यगुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्यं —शंभु छंद

दश अतिशय जन्म समय से ग्यारह, केवलज्ञान उदय से हों।
देवों कृत तेरह अतिशय हों, चौंतिस अतिशय सब मिलके हों।।
वर प्रातिहार्य हैं आठ कहें, सु अनंत चतुष्टय चार कहें।
ये छ्यालिस गुण तीर्थंकर के, हम पूजें वांछित सर्व लहें।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणमंडितमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अठारह दोष रहित के अर्घ्य

—सोरठा —

दोष अनंतानंत, त्रिभुवन जन में व्याप्त हैं।
आप किया उन अंत, कुसुमांजलि से पूजहूँ।।१।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

—भुजंगप्रयात छंद —

क्षुधा व्याधि पीड़ा करे सर्व जन को।
ये आहार संज्ञा हरें घातिहर जो।।

प्रभो केवली के असाता उदय भी।
फले सौख्य में मैं जजूँ नित उन्हें ही।।१।।

ॐ ह्रीं क्षुधामहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

तृषा वेदना से पिपासित सभी हैं।
प्रभो आपने स्वात्म अमृत पिया है।।
इसे नाशने हेतु प्रभु को जजूँ मैं।
सदा साम्य पीयूष रुचि से चखूँ मैं।।२।।

ॐ ह्रीं तृषामहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

महा दोष भीती सभी को सतावे।
प्रभू ने सभी भय डराकर भगाये।।
जजूँ सात भय नाश हेतू तुम्हीं को।
भजूँ सात उत्तम परं स्थान ही को।।३।।

ॐ ह्रीं भयमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

महा क्रोध अग्नी दहे सर्व जग को।
प्रभू ने महाशांति से नाशा उसको।।
इसी क्रोध आश्रित सभी दोष आते।
जजूँ आप को क्रोध को मूल नाशें।।४।।

ॐ ह्रीं क्रोधमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

चिता से अधिक दुःख चिंता करे है।
तनू स्वास्थ्य को हर महा दुख भरे है।।
इसे मूल से आपने नष्ट कीना।
जजूँ मैं न चिंता कभी हो हृदय मा।।५।।

ॐ ह्रीं चिंतामहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

जरा जर्जरी देह करके सुखावे।
इसे नाश कर मूल से सौख्य पावें।।

प्रभो केवली आपको ही जजूँ मैं।
इसे नाश के स्वात्म सुख को भजूँ मैं।।६।।

ॐ ह्रीं जरामहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

सदा राग संसार में ही भ्रमावे।
प्रभो आपमें राग मुक्ती दिलावे।।
तथापी तुम्हीं ने सभी राग नाशे।
जजूँ भक्ति से तो अशुभ राग भागे।।७।।

ॐ ह्रीं रागमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

महा मोह सम्राट् से सब दुखी हैं।
इसे मूल से प्रभु उखाड़ा सुखी हैं।।
इसी मोह को नाश हेतू जजूँ मैं।
महा ध्वांत हर ज्ञान ज्योती भजूं मैं।।८।।

ॐ ह्रीं मोहमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

करोड़ों भरे रोग इस देह में हैं।
प्रभू रोग को नाश करके सुखी हैं।।
विविध भांति के रोग नित कष्ट देते।
तुम्हें पूजते ये मुझे छोड़ देते।।९।।

ॐ ह्रीं रोगमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

महामल्ल मृत्यू ने त्रैलोक्य जीता।
इसे जीत तुम मुक्ति लक्ष्मी गृहीता।।
जजें आपको सर्व दुख के जयी हों।
वही लोक में शीघ्र मृत्युंजयी हों।।१०।।

ॐ ह्रीं मृत्युमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

पसीना न तन में प्रभू आप के हो।
प्रभो केवली आपके ये नहीं हों।।

इसे मूल से जो हरें वीतरागी।
उन्हीं को जजूँ मैं बनूं सौख्यभागी।।११।।

ॐ ह्रीं स्वेदमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

प्रभो! एक क्षण में त्रयी लोक लोका।
नहीं खेद श्रम रंच भी आपको था।।
विषादो महादोष जीता तुम्हीं ने।
नशे दोष मेरा जजूं अर्घ से मैं।।१२।।

ॐ ह्रीं विषादमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

महामद कहें आठ विध या असंख्ये।
उन्हीं से लहें नीचगति जीव सब ये।।
हरें मान उनको सभी इंद्र वंदें।
जजूँ आपको सर्व मद को विखंडे।।१३।।

ॐ ह्रीं मदमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

रती दोष से प्रीति हो इष्ट पर में।
इसे नाश निज में धरी प्रीति प्रभु ने।।
प्रभू केवली प्रीति नाहीं किसी में।
तथापी जगत् हित करो नित जजूँ मैं।।१४।।

ॐ ह्रीं रतिमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

कुतूहलमयी विश्व को देख करके।
करें जोऽतिविस्मय हरें पूर्ण सुख वे।।
सभी कर्मकृत फेर आश्चर्य कैसा।
जजूँ भक्ति से सौख्य हो आप जैसा।।१५।।

ॐ ह्रीं विस्मयमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

जो निद्रा के वश वो स्वयं को न देखें।
निजातम दरश पूर्ण को रोक ले ये।।

इसे नष्टकर सर्व जग को विलोका।
जजूँ मैं दरश प्राप्त होवे प्रभू का।।१६।।

ॐ ह्रीं निद्रामहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

अनंतों दफे जन्म धर-धर दुःखी मैं।
न हो जन्म फिर से करूँ यत्न वो मैं।।
तुम्हीं ने पुनर्जन्म नाशा जगत में।
अतः पूजहूँ तुम चरण नाथ अब मैं।।१७।।

ॐ ह्रीं जन्ममहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

अरतिदोष से आकुलित चित्त होवे।
इसे नाशकर आपने कर्म धोये।।
यही दोष मुझको सदा दुःख देता।
जजूं आपको ये भगे शीघ्र भीता।।१८।।

ॐ ह्रीं अरतिमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

इन दोष अठारह ने जग में, सबको दुख दे दे वश्य किया।
इनसे बच सका नहीं कोई, इन त्रिभुवन में अधिपत्य किया।।
जो इनको जीते वे 'जिनेंद्र', सौ इंद्रों से वंदित जग में।
मैं पूजूँ उनको अर्घ चढ़ा, हर दोष भरें गुण वे मुझमें।।१९।।

ॐ ह्रीं अष्टादशमहादोषरहितमहावीरजिनेंद्राय पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

भगवान महावीर शासनदेव अर्घ्य —

महावीर जिन पास में, सुर 'मातंग' वसंत।
जिन शासन रक्षक कहा, अर्घ चढ़ा पूजंत।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः शासनदेव मातंगयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

भगवान महावीर शासनदेवी अर्घ्य —

महावीर जिन भाक्तिका, 'सिद्धायिनी' प्रसिद्ध।
रुचि से अर्घ चढ़ावते, करो मनोरथ सिद्ध।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः शासनदेवि सिद्धायिनीयक्षि! अत्र आगच्छ आगच्छ, इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

भगवान महावीर के ११ गणधर के अर्घ्य —

सोरठा- **स्वानुभूति से आप, नित आतम अनुभव करें।**
द्वादशगण के नाथ, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।१।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

दोहा- **'इन्द्रभूति' गणधर प्रथम, गौतम नाम प्रसिद्ध।**
जिनकी कृपा प्रसाद से, मोक्षमार्ग है सिद्ध।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः इन्द्रभूतिनामगौतमगणधरदेवाय अर्घ्यं.....।

'वायुभूति' गणधर दुतिय, सर्वऋद्धिपरिपूर्ण।
जो जन पूजें भक्ति से, करें मोह अरि चूर्ण।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः वायुभूतिगणधरदेवाय अर्घ्यं.....।

'अग्निभूति' गणधर तृतिय, नमूं सर्वसुख कंद।
ध्यान अग्नि से कर्म दह, बने सिद्ध भगवंत।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः अग्निभूतिगणधरदेवाय अर्घ्यं.....।

गणी 'सुधर्माचार्य' गुरु, महावीर के नंद।
पूजूं अर्घ्य चढ़ायके, पाऊं परमानंद ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः सुधर्माचार्यगणधरदेवाय अर्घ्यं.....।

'श्री मौर्य' गणधर गुरु, भविजन के शिर ताज।
पूजूं अर्घ्य चढ़ायके, मिले सौख्य साम्राज्य।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः मौर्यगणधरदेवाय अर्घ्यं.....।

गणी 'मौद्र्य' गुरु के चरण, जजूं सर्व सुखकार।
पाऊं निज सुखसंपदा, मिले भवोदधि पार।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः मौन्द्र्यगणधरदेवाय अर्घ्यं.....।

गणधर 'पुत्र' सुनाम है, सन्मति प्रभु के नंद।
जजूं अर्घ्य ले भक्ति से, पाऊं सौख्य अनिंद्य।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः पुत्रनामगणधरदेवाय अर्घ्यं.....।

'श्रीमैत्रेय' गणीन्द्र को, नमूं नमूं शतबार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, भरे सौख्य भंडार।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः श्रीमैत्रेयगणधरदेवाय अर्घ्यं.....।

गणी 'अकंपन' को नमूं, सर्व ऋद्धि के ईश।
ऋद्धि सिद्धि को पाय के, वसूं भुवन के शीश।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः श्रीअकंपनगणधरदेवाय अर्घ्यं.....।

'अंधवेल' गणधर गुरू, मोहध्वांत से दूर।
जजूं चरण अरविंद मैं, पाऊं सुख भरपूर।।१०।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः अंधवेलगणधरदेवाय अर्घ्यं.....।

गुरु 'प्रभास' गणधर चरण, पूजत हो आनंद।
पाऊं ज्ञान प्रकाश मैं, हरूं जगत के द्वंद्व।।११।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः प्रभासगणधरदेवाय अर्घ्यं.....।

—नरेन्द्र छंद —

महावीर प्रभू के गणधर हैं, ग्यारह[१] सब गुण पूरे।
इन्द्रभूति गौतम आदिक ये, यम की समरथ चूरें।।
ये भव्यों के रोग शोक दुख, दारिद कष्ट निवारें।
नव निधि ऋद्धी यश संपत्ती, देकर भव से तारें।।१२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः इन्द्रभूतिप्रमुखएकादशगणधरचरणेभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

---

१. ये ११ गणधर के नाम उत्तरपुराण के आधार से हैं।

महावीर स्वामी के १४ हजार मुनियों के पृथक्-पृथक् अर्घ्य —

चाल- हे दीनबंधु.....

श्री वर्धमान का समोशरण अपूर्व है।
मुनिराज तीन सौ वहां पे ज्ञानी पूर्व हैं।।
सर्वार्थ सिद्धि हेतु सर्व साधु को नमूं।
निज के अनंत गुण विकास दोष को वमूं।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः त्रयशतपूर्वधरऋषिभ्यः अर्घ्यं.....।

शिक्षक मुनी निन्यानवे शतक वहाँ रहें।
जिनके वचन पियूष से ही तृप्ति को लहें।।
सर्वार्थ सिद्धि हेतु सर्व साधु को नमूं।
निज के अनंत गुण विकास दोष को वमूं।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः नवसहस्रनवशतशिक्षकऋषिभ्यः अर्घ्यं.....।

जो ज्ञान अवधि धारते तेरह शतक मुनी।
उन पूजते हि पाप कर्म निर्जरा घनी।।
सर्वार्थ सिद्धि हेतु सर्व साधु को नमूं।
निज के अनंत गुण विकास दोष को वमूं।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः त्रयोदशशतअवधिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं.....।

कैवल्यज्ञान के धनी हैं सात सौ वहाँ।
घाती कर्म को घात अव्याबाध सुख लहा।।
सर्वार्थ सिद्धि हेतु सर्व साधु को नमूं।
निज के अनंत गुण विकास दोष को वमूं।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनःसप्तशतकेवलज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं.....।

विक्रिय धरें नव सौ मुनी तप तेज से वहाँ।
जो पूजते संपूर्णज्ञान पावते यहाँ।।
सर्वार्थ सिद्धि हेतु सर्व साधु को नमूं।
निज के अनंत गुण विकास दोष को वमूं।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः नवशतविक्रियाधारिऋषिभ्यः अर्घ्यं.....।

मुनिराज विपुलमति ज्ञान धारते वहाँ।
वे पाँच सौ प्रमाण उन्हें पूजहूँ यहाँ।।
सर्वार्थ सिद्धि हेतु सर्व साधु को नमूं।
निज के अनंत गुण विकास दोष को वमूं।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनःपंचशतविपुलमतिज्ञानिऋषिभ्यः अर्घ्यं.....।

वादी मुनीश चार सौ जिन धर्म प्रकाशें।
जो उनके पाद को नमें वे स्वात्म प्रकाशें।।
सर्वार्थ सिद्धि हेतु सर्व साधु को नमूं।
निज के अनंत गुण विकास दोष को वमूं।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः चतुःशतवादिऋषिभ्यः अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य-दोहा —

महावीर प्रभु के ऋषी, चौदह सहस प्रमाण।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले सौख्य निर्वाण।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः चतुर्दशसहस्रसर्वऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः

गणिनी महासती चंदना को अर्घ्य —शंभु छंद —

महावीर प्रभू के समवसरण में, गणिनी श्री चंदनासती।
जिनशीलधर्म से प्रभु आहार, के समय सभी बेड़ियां कटीं।।
रत्नत्रय गुणमणि से भूषित, नित शुभ्रवस्त्र से शोभित थीं।
इनकी पूजा वंदन भक्ती से, मिल जाती शिवपथ युक्ती।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः समवसरणस्थितगणिनीमहासतीचंदनायै अर्घ्यं....।

३६ हजार आर्यिकाओं को अर्घ्य —

श्री वीर प्रभू के सभा बीच, छत्तीस हजार आर्यिका थीं।
मां सती चंदना गणिनी संघ, सब संयम रत्न साधिका थीं।।
इनको 'वंदामि' कर करके, मैं शिवपथ प्रशस्त कर लेऊं।
मेरा संयम निर्दोष पले, गुरु चरण हृदय में रख लेऊं।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः समवसरणस्थितषट्त्रिंशत्सहस्रआर्यिकाभ्यः अर्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य-गीताछंद —

सिद्धार्थनृप कुण्डलपुरी में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़ शुक्ला छठ तिथी, प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु द्रव्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।१।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां श्रीमहावीरजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं.....।

सित चैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुये।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरपति मुकुट भी झुक गये।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण आ गये।
हम पूजते वसु द्रव्य ले, निज में परम आनंद लिये।।२।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीमहावीरजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं.....।

मगसिर वदी दशमी तिथी, संसार से निस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आन कर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि से महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु द्रव्य ले, संसार सागर से तिरें।।३।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां श्रीमहावीरजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं.....।

प्रभु ने प्रथम आहार राजा, कूल के घर में लिया।
वैशाख सुदि दशमी तिथी, केवलरमा परिणय किया।।
श्रावणवदी एकम तिथी, गौतम मुनी गणधर बने।
तब दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी, हम पूजते हर्षित उन्हें।।४।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां श्रीमहावीरजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं:....।

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठे विभो।।
निर्वाणलक्ष्मी वरण कर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु द्रव्य ले, तुम पास में आके बसें।।५।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां श्रीमहावीरजिननिर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं.....।

—शंभु छंद —

महावीर प्रभू की जन्मभूमि, कुंडलपुरि इंद्रों से वंदित।
चारण ऋषि संजय विजय मुनी ने, सन्मति नाम रखा गुणभृत।।
संगमसुर ने महावीर नाम से, जहां वीर के गुण गाये।
मुनिगणनुत ऐसी नगरी की, पूजा करते हम हरषायें।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर जन्मभूमिकुण्डलपुर्यै अर्घ्यं.....।

वर राजगृही में विपुलाचल पर्वत, त्रिभुवन जन से वंदित।
प्रभु समवसरण में छ्यासठ दिन के, बाद दिव्य ध्वनि हुई प्रगट।।
गौतम गणधर ने द्वादशांग, रचना कर जग उपकार किया।
जिस अंशरूप जिनवाणी ने, जन-जन का मार्ग प्रशस्त किया।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर स्वामिनः प्रथमदेशनास्थलराजगृहीविपुलाचलपर्वताय अर्घ्यं....।

पावापुरि में जल सरवर में बहु, कमल खिलें अति सुरभि लिये।
उस मध्य शिलामणिमयी उपरि से, महावीर प्रभु मोक्ष गये।।
इन्द्रों ने चरण चिन्ह रचकर, पूजा की दीपावली किया।
निर्वाणभूमि को जजते ही, मैंने भी आतमशुद्ध किया।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः निर्वाणभूमिपावापुर्यै अर्घ्यं.....।

—पूर्णार्घ्य —

जो पंचकल्याणक को जजते, वे सर्व कल्याणक पाते हैं।
प्रभु कल्याणकभूमी पूजत, अतिशायी पुण्य कमाते हैं।।
इन तीर्थों की पूजा भक्ती, स्वात्मा को तीर्थ बनाती है।
मैं भी पूजूँ अतिश्रद्धा से, मेरा मन कमल खिलाती है।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनः पंचकल्याणकतत्पवित्रभूमिभ्यः पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र — ॐ ह्रीं समवसरणस्वामिने श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः।

(पीले पुष्प, सुगंधित पुष्प या लवंग से १०८ बार)

जयमाला

दोहा— चिन्मय चिंतामणि प्रभो! गुण अनंत की खान।
समवसरण वैभव सकल, वह लवमात्र समान।।१।।

—शंभु छंद—

जय जय तीर्थंकर महावीर, तुम धर्मचक्र के कर्ता हो।
जय जय अनंतदर्शन सुज्ञान, सुख वीर्य चतुष्टय भर्ता हो।।
जय जय अनंत गुण के धारी, प्रभु तुम उपदेश सभा न्यारी।
सुरपति की आज्ञा से धनपति, रचता है त्रिभुवन मनहारी।।२।।

प्रभु समवसरण गगनांगण में, बस अधर बना महिमाशाली।
यह इन्द्र नीलमणि रचित गोल, आकार बना गुणमणिमाली।।
सीढ़ी इक एक हाथ ऊँची, चौड़ी सब बीस हजार बनी।
नर बाल वृद्ध लूले लंगड़े, चढ़ जाते सब अतिशायि घनी।।३।।

पहला परकोटा धूलिसाल, बहुवर्ण रत्न निर्मित सुंदर।
कहिं पद्मराग कहिं मरकतमणि, कहिं इन्द्रनीलमणि से मनहर।।
इसके अभ्यंतर चारों दिश, हैं मानस्तंभ बने ऊँचे।
ये बारह योजन से दिखते, जिनवर से द्विदश गुणे ऊँचे।।४।।

इनमें चारों दिश जिनप्रतिमा, उनको सुरपति नरपति यजते।
ये सार्थक नाम धरें दर्शन से, मानो मान गलित करते।।
इस समवसरण में चार कोट, अरु पांच वेदिकायें ऊँची।
इनके अंतर में आठ भूमि, फिर प्रभु की गंधकुटी ऊँची।।५।।

इस धूलिसाल अभ्यंतर में है, भूमि चैत्य प्रासाद प्रथम।
एकेक जैन मंदिर अंतर से, पांच पांच प्रासाद सुगम।।
चारों गलियों में उभय तरफ, दो दोय नाट्यशालाएं हैं।
अभिनय करतीं जिनगुण गातीं, सुर भवनवासि कन्यायें हैं।।६।।

फिर वेदी वेढ़ रही ऊँची, गोपुर द्वारों से युक्त वहाँ।
द्वारों पर मंगलद्रव्य निधी, ध्वज तोरण घंटा ध्वनी महा।।
फिर आगे खाई स्वच्छ नीर, से भरी दूसरी भूमी है।
फूले कुवलय कमलों से युत, हंसों के कलरव की ध्वनि है।।७।।

फिर दूजी वेदी के आगे, तीजी है लताभूमि सुन्दर।
बहुरंग बिरंगे पुष्प खिले, जो पुष्पवृष्टि करते मनहर।।
फिर दूजा कोट बना स्वर्णिम, गोपुर द्वारों से मन हरता।
नवनिधि मंगल घट धूप घटों युत, में प्रवेश करती जनता।।८।।

आगे उद्यान भूमि चौथी, चारों दिश बने बगीचे हैं।
क्रम से अशोक वन सप्तपर्ण, चंपक अरु आम्र तरू के हैं।।
प्रत्येक दिशा में एक-एक, तरु चैत्य वृक्ष अतिशय ऊँचे।
इनमें जिन प्रतिमा प्रातिहार्ययुत, चार-चार मणिमय दीखें।।९।।

इसके आगे वेदी सुन्दर, फिर ध्वजाभूमि ध्वज से शोभे।
फिर रजतवर्णमय परकोटा, गोपुर द्वारों से युत शोभे।।
फिर कल्पवृक्ष भूमी छट्ठी, दशविध के कल्पवृक्ष इसमें।
प्रतिदिश सिद्धार्थ वृक्ष चारों हैं, सिद्धों की प्रतिमा उनमें।।१०।।

चौथी वेदी के बाद भवन, भूमी सप्तमि के उभय तरफ।
नव नव स्तूप रत्न निर्मित, उनमें जिनवर प्रतिमा सुखप्रद।।
परकोटा स्फटिकमयी चौथा, मरकत मणि गोपुर से सुन्दर।
उस आगे श्रीमंडप भूमी, बारह कोठों से जनमनहर।।११।।

फिर पंचम वेदी के आगे, त्रय कटनी सुन्दर दिखती हैं।
पहली कटनी पर यक्ष शीश पर, धर्मचक्र चारों दिश हैं।।
दूजी कटनी पर आठ महाध्वज, नवनिधि मंगल द्रव्य धरे।
तीजी कटनी पर गंधकुटी पर, जिनवर दर्शन पाप हरें।।१२।।

जय जय जिनवर सिंहासन पर, चतुरंगुल अधर विराज रहे।
जय जय जिनवर की दिव्यध्वनि, सुनकर सब भविजन तृप्त भये।।
सब जातविरोधी प्राणीगण, आपस में मैत्री भाव धरें।
जो पूजें ध्यावें गुण गावें, कैवल्य ज्ञानमति प्राप्त करें।।१३।।

दोहा— **चतुर्मुखी ब्रह्मा तुम्हीं, ज्ञान व्याप्त जग विष्णु।**
देवों के भी देव हो, महादेव अरि जिष्णु।।१४।।

ॐ ह्रीं अन्तरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगसमवसरणविभूतिसमन्विताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—गीता छंद —

जो महावीर समवसरण, विधान भक्ती से करें।
वे जगत् के बहिरंग वैभव, की सुखद संपति भरें।।
फिर पूर्ण दर्शन ज्ञान सुख, वीरज चतुष्टय को धरें।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्य कर, निर्वाण लक्ष्मी को वरें।।१।।

इत्याशीर्वादः

इति श्रीमहावीर समवसरण विधान संपूर्णम् ।

प्रशस्ति

—शंभु छंद —

महावीर प्रभू का समवसरण जब, राजगृही विपुलाचल पर।
छ्यासठ दिन तक ध्वनि नहीं खिरी, सौधर्म इन्द्र ने चिंतन कर।।
युक्ती से ब्राह्मण इन्द्रभूति को, लाया अतिशय प्रमुदित हो।
वे शिष्य बने गौतम गणधर, चउज्ञान व ऋद्धि समन्वित हो।।१।।

श्रावणवदि एकम आदि दिवस, प्रभु शासन जग में प्रगट हुआ।
प्रभु 'महावीर शासन जयंति', यह पर्व जगत् में उदित हुआ।।
पच्चिस सौ साठ वर्ष[१] पहले, 'महावीर देशना' प्रथम हुई।
विपुलाचल पर्वत पूज्य बना, यह राजगृही भी धन्य हुई।।२।।

यहाँ ग्यारह लाख छ्यासी हजार, पण सौ उन्नीस वर्ष पहले।
मुनिसुव्रत तीर्थंकर जन्मे, कल्याणक चार हुए यहीं पे।।
यह निमित्त 'वीरशासन जयंति', उत्सव विधान के लिए बना।
महावीर समवसृति का विधान, कर दिया पूर्ण अतिशायि घना।।३।।

वीराब्द पचीस सौ उन्तीस की, आषाढ़ सुदी छठ तिथि सुंदर।
'महावीर समवसरण विधान' रचना प्रभु गर्भागम तिथि पर।।
बीसवीं सदी के प्रथमसूरि, चारित्र चक्रवर्ती गुरुवर।
आचार्य शांतिसागर जी मूलसंघ के हुये आचार्यप्रवर।।४।।

इन पट्टाधीश वीरसागर, गुरुवर हैं मम दीक्षा दाता।
इनकी शिष्या मैं ज्ञानमती, गणिनी विधान में विख्याता।।
जब तक महावीर जन्मभूमि, कुण्डलपुर जग में मान्य रहे।
तब तक विधानकृति इस जग में, सब जन को मंगलदायि रहे।।५।।

इति भद्रं भूयात्

---

१. ईसवी सन् २००३ में मेरे ससंघ सानिध्य में "वीरशासन जयंती पर्व समारोह" राजगृही में मनाया गया उस निमित्त ही मैंने यह विधान बनाया है।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–सौ साल पहले.....

बीते युगों में यहाँ पर समवसरण आया था.....समवसरण आया था।
मैंने न जाने तब कहां जनम पाया था।। टेक.।।

करोड़ों साल पहले भी, हजारों साल पहले भी।
ऋषभ महावीर इस धरती पे खाए और खेले भी।।
भारत की वसुधा पर तब स्वर्ग उतर आया था-स्वर्ग उतर आया था।
मैंने न जाने तब कहां जनम पाया था।।१।।

हुआ था जिनवरों को दिव्य केवलज्ञान जब वन में।
तभी ऐसे समवसरणों की रचना की थी धनपति ने।।
इन्द्र मुनी चक्री सबने लाभ बहुत पाया था-लाभ बहुत पाया था।
मैंने न जाने तब कहां जनम पाया था।।२।।

आज के इस महाकलियुग में नहिं साक्षात् जिनवर हैं।
तभी हम मूर्तियों को प्रभु बनाकर रखते मंदिर में।।
सतियों ने इनकी भक्ति करके लाभ पाया था-करके लाभ पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।४।।

अधर आकाश की रचना धरा पर आज दिखती है।
बीच में ''चन्दना'' देखो प्रभू की गन्धकुटि भी है।।
समवसरण का यह वर्णन शास्त्रों में आया था-शास्त्रों में आया था।
मैंने न जाने तब कहां जनम पाया था।।४।।

आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–तन डोले.....

प्रभु महावीर के समवसरण की मंगल दीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूं आरतिया।
समवसरण के बीच प्रभू जी, नाशा दृष्टि विराजे।
गणधर मुनि नरपति से शोभित, बारह सभा सुराजें।। प्रभू जी.....
ओंकार ध्वनी, सुन करके मुनी, रत रहें स्वपर कल्याण में
मैं आज उतारूं आरतिया।।१।।
चार दिशा के मानस्तंभों, को भी मेरा वन्दन।
मिथ्यादृष्टी जिन को लखकर, पाते सम्यग्दर्शन।।प्रभू जी.....।।
करके दर्शन, प्रभु का वन्दन, सम्यक् का हुआ प्रसार है
मैं आज उतारूं आरतिया।।२।।
ध्वजाभूमि के अन्दर देखो, ऊँचे ध्वज लहराएं।
मालादिक चिन्हों से युत वे, जिनवर का यश गाएं।।प्रभू जी.....
शुभ कल्पवृक्ष, सिद्धार्थ वृक्ष, से समवसरण सुखकार है
मै आज उतारूं आरतिया।।३।।
भवनभूमि के स्तूपों में, जिनवर बिम्ब विराजें।
द्वादशगणयुत श्री मण्डप में, सम्यग्दृष्टी राजें।।प्रभू जी.....
अगणित वैभव, युत बाह्य विभव, से शोभ रहे भगवान हैं
मैं आज उतारूं आरतिया।।४।।
धर्मचक्रयुत गंधकुटी पर, अधर प्रभू रहते हैं।
उनकी आरति से ही 'चन्दना', भव आरत टरते हैं।। प्रभू जी.....
प्रभु वीरा की, अतिवीरा की, गुण महिमा अपरम्पार है।
मैं आज उतारूं आरतिया।।५।।

आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-(नागिन धुन)

जय वीरप्रभो, महावीर प्रभो, की मंगल दीप प्रजाल के
मैं आज उतारूं आरतिया।। टेक.।।
सुदी छट्ठ आषाढ़ प्रभू जी, त्रिशला के उर आए।
पन्द्रह महिने तक कुबेर ने, बहुत रत्न बरसाये।।प्रभू जी.।।
कुण्डलपुर की, जनता हर्षी, प्रभु गर्भागम कल्याण पे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।१।।
धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहां प्रभु लीना।
चैत सुदी तेरस के दिन, वहां इन्द्र महोत्सव कीना।।प्रभू जी.।।
थे नाथ वंश के भूषण तुम, बस एक मात्र अवतार थे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।२।।
यौवन में दीक्षा धारणकर, राजपाट सब त्यागा।
मगसिर असित मनोहर दशमी, मोह अंधेरा भागा।।प्रभू जी.।।
बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिये मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।३।।
शुक्ल दशमि बैशाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतम गणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था। प्रभू. जी.।।
तब दिव्यध्वनी, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूं आरतिया।।४।।
पावापुरि सरवर में तुमने, योग निरोध किया था।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, मोक्ष प्रवेश किया था।। प्रभू.जी.।।
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूं आरतिया।।५।।
वर्धमान सन्मति अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो।
कहे 'चन्दनामती' हृदय में, ज्ञान की ज्योति भर दो।। प्रभू. जी।।
अतिशयकारी, मंगलकारी, ये कल्पवृक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूं आरतिया।।६।।

Bhajan

Music- Kabhi Ram Banke.....

Prince of Kundalpur, King of Universe,
Mahavira,O Lord ! Mahavira.
When You came in Garbh of Trishla,
Sixteen dreams seen by Trishla
Felt very happiness, Siddharth Emperor,
Mahavira,O Lord ! Mahavira.
When You had born in the Palace,
Indra and Deva came from heaven
On the Meru Mountain, Celebrated Abhishek
Mahavira, O Lord ! Mahavira.
In Young age you took Deeksha,
Gained Kevalgyan after twelwe years,
Then Samavsaran, formed came all persons,
Mahavira, O Lord ! Mahavira.
When Vira attained liberation,
Indra-human came Pawapuri then
Celebrated Diwali, from then began Diwali,
Mahavira, O Lord ! Mahavira.
Your Shasan is going today also,
We worship to you "Chandna"so
Give me blessing Prabhuvar, give me knowledge Jinvar,
Mahavira, O Lord ! Mahavira.